

प्रारंभिक परीक्षा

भारत का अदृश्य विदेशी व्यापार

संदर्भ

भारत का "अदृश्य" व्यापार आज उसके बाह्य भुगतान संतुलन में "दृश्य" माल व्यापार खाते से बड़ा है।

दृश्य और अदृश्य व्यापार क्या है?

दृश्य व्यापार (सामान/माल व्यापार)

- इसमें भौतिक वस्तुओं का निर्यात और आयात शामिल होता है।
- इसमें कपड़ा, चमड़ा, इस्पात, एल्युमीनियम, मशीनरी, तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि वस्तुएं शामिल हैं।

अदृश्य व्यापार (गैर-माल)

- इसमें वे लेनदेन शामिल हैं जिनमें भौतिक वस्तुएं शामिल नहीं हैं।
- मुख्य घटक:
 - सेवा निर्यात - आईटी/सॉफ्टवेयर, व्यवसाय, वित्तीय, अनुसंधान एवं विकास, परामर्श, संचार।
 - निजी स्थानान्तरण - विदेश में काम कर रहे भारतीयों से प्राप्त धन।
 - निवेश प्रवाह (FDI, FPI) - हालांकि इसे सकल अदृश्य प्राप्तियों में शामिल नहीं किया गया है।

भारत की विदेश व्यापार स्थिति (2024-25)

TABLE 1

INDIA'S 'VISIBLE' VERSUS 'INVISIBLE' EXPORTS

	Goods Exports	Invisibles Receipts	Services Exports	Private Transfers
2003-04	66.29	53.51	26.87	22.18
2013-14	318.61	233.57	151.81	69.64
2014-15	316.55	241.65	158.11	69.82
2015-16	266.37	235.04	154.31	65.59
2016-17	280.14	242.05	164.20	61.30
2017-18	308.97	283.41	195.09	69.13
2018-19	337.24	306.48	208.00	76.40
2019-20	320.43	321.71	213.19	83.20
2020-21	296.30	307.25	206.09	80.19
2021-22	429.16	369.6	254.53	89.13
2022-23	456.07	465.8	325.33	112.47
2023-24	441.44	501.42	341.06	118.71
2024-25	441.79	576.54	387.54	135.43

TABLE 2

A DELICATE BALANCE

	Goods Trade Balance	Invisibles Balance	Current Account Balance
2013-14	-147.61	115.31	-32.30
2014-15	-144.94	118.08	-26.86
2015-16	-130.08	107.93	-22.15
2016-17	-112.44	98.03	-14.42
2017-18	-160.04	111.32	-48.72
2018-19	-180.28	123.03	-57.26
2019-20	-157.51	132.85	-24.66
2020-21	-102.15	126.06	23.91
2021-22	-189.46	150.69	-38.77
2022-23	-265.29	198.24	-67.05
2023-24	-244.91	218.8	-26.11
2024-25	-287.21	263.85	-23.37

Amt. in (\$ billion) Source: Reserve Bank of India.

Amt. in (\$ billion) Source: Reserve Bank of India.

दृश्यमान व्यापार (माल व्यापार) -

- माल निर्यात: 441.8 बिलियन डॉलर
 - पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा कम (2022-23 में \$456.1 बिलियन)।
- माल आयात: 729 बिलियन डॉलर
 - कच्चे तेल, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोना, मशीनरी आदि के आयात से प्रेरित।
- माल व्यापार घाटा: \$287.2 बिलियन
 - भारत का अब तक का सबसे अधिक माल व्यापार घाटा।

अदृश्य व्यापार (गैर-माल) -

- सकल अदृश्य प्राप्तियां: \$576.5 बिलियन
 - इसमें सेवा निर्यात और निजी धनप्रेषण शामिल हैं।

- **सेवा निर्यात:** 387.5 बिलियन डॉलर
 - सॉफ्टवेयर, व्यवसाय, वित्तीय, संचार और परामर्श सेवाओं द्वारा नेतृत्व किया गया।
- **धनप्रेषण (निजी स्थानान्तरण):** \$135.4 बिलियन
 - विदेश से भारतीय श्रमिकों और अनिवासी भारतीयों द्वारा भेजा गया धन।
- **सेवा व्यापार अधिशेष:** \$188.8 बिलियन
 - सेवा निर्यात (\$387.5B) घटा सेवा आयात (\$198.7B)।
- **शुद्ध अदृश्य अधिशेष:** \$263.8 बिलियन
 - इसमें सेवाएं और निजी स्थानान्तरण दोनों शामिल हैं; इससे वस्तु व्यापार घाटे की भरपाई में मदद मिली।
- **चालू खाता घाटा (CAD):** \$23.4 बिलियन
 - अदृश्य वस्तुओं में मजबूत प्रदर्शन के कारण यह 2013-14 में दर्ज 32.3 बिलियन डॉलर के CAD से कम है।

चीन के साथ तुलना (2024)

सूचक	भारत (2024-25)	चीन (2024)	इनसाइट्स
माल निर्यात	\$441.8 बिलियन	\$3,409 बिलियन	चीन एक विनिर्माण/निर्यात महाशक्ति है
माल आयात	729 बिलियन डॉलर	2,641 अरब डॉलर	भारत जितना निर्यात करता है, उससे अधिक आयात करता है; चीन का व्यापार अधिशेष बहुत अधिक है
माल व्यापार संतुलन	- 287.2 बिलियन डॉलर	+ \$768 बिलियन	भारत में घाटा है, चीन में बड़ा अधिशेष
सेवाएँ निर्यात	\$387.5 बिलियन	384 बिलियन डॉलर	भारत मामूली बढ़त पर
सेवाएँ आयात	198.7 बिलियन डॉलर	613 बिलियन डॉलर	चीन कहीं अधिक सेवाओं का आयात करता है
नेट सेवा व्यापार	+ \$188.8 बिलियन	- 229 बिलियन डॉलर	भारत के पास पर्याप्त अधिशेष है
कुल अदृश्य (कुल)	+ \$263.8 बिलियन	- 344.1 बिलियन डॉलर	भारत अदृश्य वस्तुओं से कमाता है, चीन अधिक खर्च करता है
चालू खाता शेष	- 23.4 बिलियन डॉलर (घाटा)	+ \$423.9 बिलियन (अधिशेष)	चीन का अधिशेष माल व्यापार से कायम है; भारत अदृश्य साधनों से घाटे को कम कर रहा है

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

ओटावा कन्वेंशन

संदर्भ

यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने ओटावा कन्वेंशन से हटने की प्रक्रिया शुरू कर दी है, क्योंकि रूस के साथ युद्ध के समाप्त होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है।

ओटावा कन्वेंशन के बारे में -

- **अन्य नाम:** "एंटी-पर्सनल माइंस के उपयोग, भंडारण, उत्पादन और हस्तांतरण के निषेध और उनके विनाश पर कन्वेंशन"।
 - ओटावा संधि या माइंस (बारूदी सुरंग) प्रतिबंध संधि
- **अपनाया गया:** दिसंबर 1997 में ओटावा, कनाडा में।
 - लागू हुआ: 1 मार्च 1999
- **उद्देश्य:** विश्व भर में एंटी-पर्सनल बारूदी सुरंगों (APLs) को खत्म करना, नागरिक हताहतों की संख्या को कम करना और मानवीय निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना।
- **सदस्य:** 165 सदस्य देश
 - भारत, अमेरिका, रूस, चीन, इजराइल इसके सदस्य नहीं हैं।
- **प्रमुख प्रावधान:**
 - यह विधेयक एंटी-पर्सनल बारूदी सुरंगों के उपयोग, भंडारण, उत्पादन और स्थानांतरण पर प्रतिबन्ध लगाता है।
 - चार वर्षों के भीतर भण्डार को नष्ट करना आवश्यक है।
 - दस वर्षों के भीतर बारूदी सुरंगों के क्षेत्रों को खाली करना अनिवार्य है।
 - राज्यों को बारूदी सुरंगों से पीड़ितों को सहायता प्रदान करने के लिए बाध्य करता है।
- **कार्यान्वयन निकाय:** जिनेवा इंटरनेशनल सेंटर फॉर ह्यूमैनिटेरियन डिमाइनिंग (GICHD) के अंतर्गत कार्यान्वयन सहायता इकाई।

स्रोत: द प्रिंट

कैरीकॉम(CARICOM)

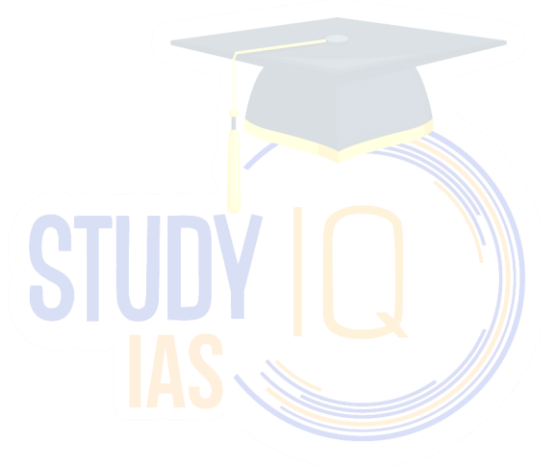
संदर्भ

कैरेबियाई नागरिक समाज ने कैरीकॉम से इजरायल पर हथियार प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया।

कैरेबियन समुदाय (CARICOM) के बारे में -

- यह कैरेबियन, अटलांटिक महासागर और अमेरिका के 15 सदस्य देशों तथा 6 सहयोगी सदस्यों का एक राजनीतिक और आर्थिक संघ है।
- **सदस्य राज्य:** एंटीगुआ और बारबुडा, बहामास, बारबाडोस, बेलीज, डोमिनिका, ग्रेनेडा, गुयाना, हैती, जमैका, मोंटसेराट, सेंट किट्स और नेविस, सेंट लूसिया, सेंट विंसेंट और ग्रेनेडाइंस, सूरीनाम और त्रिनिदाद और टोबैगो।
- **इसकी स्थापना 1973 में चगुआरामस संधि के माध्यम से हुई थी।**
- समुदाय की अध्यक्षता प्रत्येक 6 माह में सदस्य देशों के प्रमुखों के बीच बदली जाती है।
- **मुख्य लक्ष्य:** आर्थिक एकीकरण और सहयोग को बढ़ावा देना, एकीकरण के लाभों का न्यायसंगत बंटवारा सुनिश्चित करना और विदेश नीति का समन्वय करना।

स्रोत: [ABNA न्यूज़](#)



नागरी प्रचारिणी सभा

संदर्भ

चूंकि भारत में आधिकारिक भाषाओं और भाषाई पहचान पर बहस तेज हो गई है, इसलिए नागरी प्रचारिणी सभा जैसी संस्थाओं की भूमिका पर पुनर्विचार करना समय की मांग है।

इसके बारे में -

- **स्थापना:** 16 जनवरी, 1893 को वाराणसी (बनारस) में।
- **संस्थापक:** हिंदी विद्वान श्याम सुंदर दास, पंडित रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमार सिंह
- **उद्देश्य:** देवनागरी लिपि में हिंदी को बढ़ावा देना तथा आधिकारिक और साहित्यिक क्षेत्रों में इसकी मान्यता सुनिश्चित करना।
- **पृष्ठभूमि:**
 - मुगल काल के दौरान फ़ारसी आधिकारिक भाषा थी।
 - ब्रिटिश काल तक, आधिकारिक भाषाओं का प्रयोग अंग्रेजी, फ़ारसी और उर्दू में स्थानांतरित हो गया, जिससे हिंदी को दरकिनार कर दिया गया।
 - 1888 में, दरभंगा के महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह ने "हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान" के नारे से प्रभावित होकर अपने क्षेत्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में पेश किया।
- **प्रमुख पहल:**
 - प्रशासन और अदालतों की भाषा के रूप में हिंदी की वकालत की।
 - मानकीकृत हिंदी शब्दकोष बनाने की पहल की।
 - क्षेत्रीय हिंदी शब्दों और अर्थों को एकत्रित करने के लिए पूरे भारत में भाषा सर्वेक्षक भेजे (1908-1929 तक)।
- **प्रमुख प्रकाशन:**
 - **शब्द सागर (1929):** एक विस्तृत 11-खंडीय हिंदी शब्दकोष।
 - आचार्य रामचंद्र शुक्ल और श्याम सुंदर दास द्वारा लिखित प्रस्तावना।
 - **आचार्य शुक्ल द्वारा लिखित हिंदी साहित्य का इतिहास (हिंदी साहित्य का इतिहास)** - हिंदी साहित्यिक अध्ययन के लिए मूलभूत माना जाता है।
 - **नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896 से):** हिंदी की सबसे पुरानी शोध पत्रिकाओं में से एक।
 - **सरस्वती पत्रिका (1900 में शुरू):** महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित, आधुनिक हिंदी गद्य और पद्य को आकार देने में सहायक।
- **विरासत और विस्तार:**
 - हरिद्वार और नई दिल्ली में क्षेत्रीय शाखाएँ खोली गईं।
 - बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेताओं से समर्थन प्राप्त हुआ।
 - स्वतंत्रता के बाद इसके संरक्षक पंडित जवाहरलाल नेहरू थे।
- **पतन और पुनरुत्थान:** 1970 के दशक से आंतरिक विवादों और अदालती मामलों के कारण इसका पतन होने लगा।
 - इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 2023 में अपने फैसले में व्योमेश शुक्ला के नेतृत्व को बरकरार रखा और प्रशासनिक स्पष्टता बहाल की।
 - मार्च 2024 में, इसने आचार्य शुक्ल के हिंदी साहित्य का इतिहास और अमीर खुसरो की हिंदी कविताओं के संग्रह को पुनः प्रकाशित किया, जो एक पुनरुत्थान का प्रतीक है।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन

संदर्भ

आंध्र प्रदेश ने स्कूली बच्चों को किट प्रदान करने के लिए 'सर्वपल्ली राधाकृष्णन विद्यार्थी मित्र किट' लॉन्च किया है।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888-1975) के बारे में -

- **शैक्षणिक भूमिकाएँ:**
 - मैसूर और कलकत्ता विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर रहे।
 - आंध्र विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।
 - ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में स्पेल्लिंग प्रोफेसर रहे।
- **प्रमुख कृतियाँ:** भारतीय दर्शन, हिंदू जीवन दृष्टिकोण, पूर्वी धर्म और पश्चिमी विचार।
- **राजनयिक:** सोवियत संघ में राजदूत (1949-1952)।
- **राजनीतिक नेता:**
 - भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति (1952-1962)।
 - भारत के दूसरे राष्ट्रपति (1962-1967)।
- **विरासत:** उनका जन्मदिन (5 सितंबर) भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- **पुरस्कार:** भारत रत्न (1954), ब्रिटिश सरकार द्वारा नाइटहुड की उपाधि (स्वतंत्रता के बाद यह उपाधि बंद कर दी गई)।



स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)



सौर फोटोवोल्टिक (PV) सेल

संदर्भ

भारत द्वारा चीन से सौर फोटोवोल्टिक (PV) सेल का आयात 141% की वृद्धि के साथ बढ़ा।

सौर फोटोवोल्टेइक (PV) सेल क्या हैं और सौर पैनलों में उनका उपयोग कैसे किया जाता है?

- **PV सेल अर्धचालक उपकरण (आमतौर पर सिलिकॉन से बने) होते हैं जो सूर्य के प्रकाश को फोटोवोल्टिक प्रभाव के माध्यम से सीधे बिजली में परिवर्तित करते हैं।**
- **कार्य सिद्धांत:** जब सूर्य का प्रकाश (फोटॉन) PV सेल पर पड़ता है, तो यह इलेक्ट्रॉनों को उत्तेजित करता है, तथा यदि फोटॉन ऊर्जा पदार्थ के बैंड गैप से अधिक हो जाती है, तो विद्युत धारा उत्पन्न होती है।
- **सेल निर्माण:** एक विशिष्ट सिलिकॉन PV सेल में P-प्रकार और N-प्रकार अर्धचालक परतें होती हैं जो एक पी.एन. जंक्शन बनाती हैं, जो प्रकाशित होने पर विद्युत विभव उत्पन्न करती है।
- **पैनल असेंबली:** कई PV सेल आपस में जुड़े होते हैं और एक सौर पैनल/मॉड्यूल बनाने के लिए एनकैप्सुलेट किए जाते हैं। उच्च बिजली उत्पादन के लिए एक सरणी बनाने के लिए कई पैनलों को जोड़ा जा सकता है।
- **पैनलों में उपयोग:** सौर पैनलों को सूर्य के प्रकाश को ग्रहण करने तथा घरों, व्यवसायों या ग्रिड के लिए बिजली की आपूर्ति करने के लिए छतों या खुले मैदानों पर स्थापित किया जाता है।

उष्णकटिबंधीय और कम आय वाले क्षेत्रों में PV सिस्टम पर अवसंरचनात्मक और जलवायु संबंधी बाधाएँ

अवसंरचनात्मक बाधाएँ:

- **अविश्वसनीय ग्रिड:** कमज़ोर बिजली ग्रिड हमेशा उत्पादित सौर ऊर्जा को कुशलता से अवशोषित या वितरित नहीं कर सकते हैं।
- **उच्च प्रारंभिक लागत:** हालाँकि PV मॉड्यूल की कीमतें गिर गई हैं, लेकिन सहायक अवसंरचना (माउंट, वायरिंग, इनवर्टर, इंस्टॉलेशन) की लागत अभी भी अधिक है।
- **रखरखाव:** इंस्टॉलेशन, सफाई और मरम्मत के लिए प्रशिक्षित तकनीशियनों की कमी।
- **भंडारण सीमाएँ:** रात के समय या बादल वाले दिनों के लिए बैटरी भंडारण लागत और जटिलता को बढ़ाता है।

जलवायु संबंधी बाधाएँ:

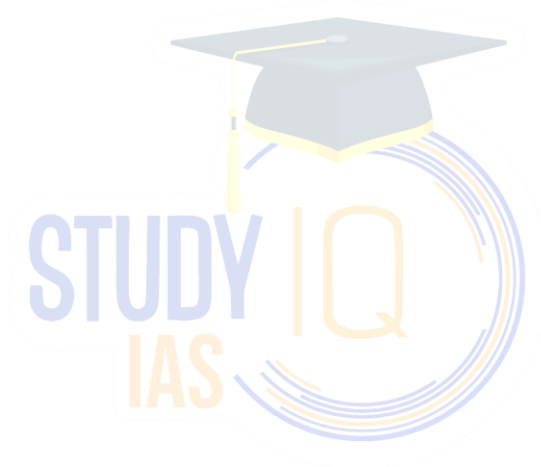
- **उच्च तापमान:** PV मॉड्यूल उच्च तापमान (उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में आम) पर कम कुशलता से काम करते हैं।
- **वायु प्रदूषण और धूल:** प्रदूषण और धूल पैनलों तक पहुँचने वाली सूर्य की रोशनी को कम करते हैं, जिससे आउटपुट कम होता है (प्रदूषण के कारण 2-11% की वार्षिक हानि, गंदगी के कारण 3-4%)।
- **आर्द्रता और वर्षा:** उच्च आर्द्रता मॉड्यूल स्थायित्व को प्रभावित कर सकती है, और अत्यधिक वर्षा कनेक्शन को नुकसान पहुँचा सकती है या बाधित कर सकती है।
- **सूर्य के प्रकाश में परिवर्तनशीलता:** उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में बादलों या मानसून के कारण तीव्र, लेकिन साथ ही परिवर्तनशील, सौर विकिरण हो सकता है।

शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव क्या है और PV स्थापनाएं इसमें किस प्रकार योगदान दे सकती हैं?

- **PV पैनलों का योगदान:**
 - PV मॉड्यूल सूर्य के प्रकाश को अवशोषित करते हैं तथा केवल एक भाग को बिजली में परिवर्तित करते हैं; शेष भाग को ऊष्मा के रूप में मुक्त कर दिया जाता है।
 - बड़े पैमाने पर PV स्थापनाएं स्थानीय तापमान को बढ़ा सकती हैं, जिससे घनी आबादी वाले शहरी क्षेत्रों में ऊष्मा द्वीप प्रभाव और अधिक बढ़ सकता है।

सौर ऊर्जा अपनाने की प्रमुख पहल		
योजना / तंत्र	फोकस क्षेत्र	प्रोत्साहन/लक्ष्य
सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना	छत पर आवासीय सौर ऊर्जा	↑1 करोड़ घर, 300 यूनिट/माह, ₹78 हजार सब्सिडी
पीएम-कुसुम योजना (प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान)	कृषि सौर ऊर्जा	60% तक सब्सिडी; पंप + सौर संयंत्र
राष्ट्रीय सौर मिशन	उपयोगिता + छत पर सौर ऊर्जा	100 गीगावाट लक्ष्य: 40 गीगावाट छत, 60 गीगावाट उपयोगिता

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)



हाल ही में समाचारों में

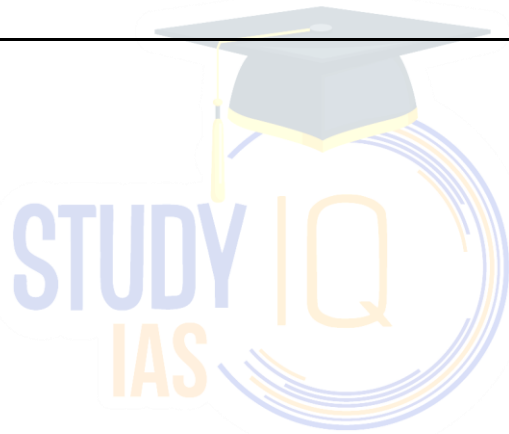
→ भारतीय रेलवे ने नया 'रेलवन(RailOne)' ऐप लॉन्च किया।

→ ऐप के बारे में -

- ◆ एकाधिक रेलवे सेवाओं (टिकट, पूछताछ, वॉलेट, आदि) को एक ही ऐप में जोड़ता है।
- ◆ mPIN या बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण का उपयोग करके लॉग इन कर सकते हैं।
- ◆ रेलकनेक्ट और यूटीएसऑनमोबाइल ऐप्स से क्रेडेंशियल्स का समर्थन करता है।
- ◆ आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट, यूटीएस, रेल मदद, फूड ऑन ट्रैक, एनटीईएस जैसे कई ऐप्स की आवश्यकता समाप्त हो गई है।
- ◆ व्यापक रेलवे कार्यात्मकताओं के लिए स्वच्छ, अव्यवस्था मुक्त इंटरफ़ेस प्रदान करना है

→ PLoS ग्लोबल पब्लिक हेल्थ में प्रकाशित एक रिपोर्ट बताती है कि पीएम 2.5 के बढ़े हुए स्तर के संपर्क में आने वाली माताओं में समय से पहले प्रसव की संभावना उन माताओं की तुलना में 70% अधिक होती है, जो इसके संपर्क में नहीं थीं।

→ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 'द ऑर्डर ऑफ द रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एंड टोबैगो' से सम्मानित किया गया, जिससे वह कैरेबियाई देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान पाने वाले पहले विदेशी नेता बन गए।



संपादकीय सारांश

अमेरिका में 500% टैरिफ बिल: भारत पर प्रभाव

संदर्भ

अमेरिकी सीनेटर लिंडसे ग्राहम एक विधेयक का प्रस्ताव करने जा रहे हैं, जिसके तहत रूस के साथ व्यापारिक संबंध रखने वाले देशों से अमेरिकी आयात पर 500% टैरिफ लगाया जाएगा।

प्रस्तावित अमेरिकी विधेयक का भारत पर प्रभाव -

- **भारतीय निर्यात के लिए खतरा:** यदि अमेरिका को निर्यात किए जाने वाले भारतीय सामानों पर 500% टैरिफ लगाया जाता है, तो वे अप्रतिस्पर्धी हो जाएंगे, जिससे फार्मास्यूटिकल्स, कपड़ा, रत्न एवं आभूषण, तथा आईटी सेवाओं जैसे क्षेत्र गंभीर रूप से प्रभावित होंगे।
- **आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान:** अमेरिका को निर्यात पर निर्भर भारतीय व्यवसायों को अनुबंध घाटे, कम ऑर्डरों और आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है।
- **संभावित प्रतिशोध:** भारत को जवाबी कार्रवाई पर विचार करने या अपने निर्यात बाजारों में विविधता लाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।
- **तनावपूर्ण संबंध:** अमेरिका और रूस के बीच संबंधों को संतुलित करने की भारत की दीर्घकालिक नीति की कड़ी परीक्षा होगी, जिससे संभवतः दोनों देशों के साथ या किसी एक देश के साथ तनाव पैदा हो सकता है।
- **रक्षा एवं ऊर्जा सुरक्षा:** चूंकि भारत महत्वपूर्ण रक्षा हार्डवेयर और ऊर्जा आयात के लिए रूस पर निर्भर है, इसलिए संबंधों में किसी भी प्रकार की कमी से राष्ट्रीय सुरक्षा प्रभावित हो सकती है।
- **आंतरिक मतभेद:** यह मुद्दा भारत में रूस समर्थक (रूसप्रेमी) और व्यावहारिक (रूसोसंदेहवादी) खेमों के बीच बहस को बढ़ावा दे सकता है, जिसका नीतिगत निर्णयों और जनमत पर प्रभाव पड़ सकता है।
- **आर्थिक लागत:** सस्ते तेल या रक्षा उपकरणों के लिए रूस पर निर्भर उद्योग संबंध बनाए रखने के लिए लॉबिंग कर सकते हैं, जबकि निर्यात-संचालित क्षेत्र अमेरिकी हितों के साथ पुनःसंरचना के लिए दबाव डाल सकते हैं।
- **चीन कारक:** रूस के साथ कमजोर होते संबंध मास्को को चीन और संभवतः पाकिस्तान के करीब ला सकते हैं, जिससे एशिया में सामरिक परिदृश्य बदल सकता है और भारत को नुकसान हो सकता है।
- **सामरिक स्वायत्तता पर दबाव:** भारत की स्वतंत्र विदेश नीति ("रणनीतिक स्वायत्तता") की दिशा में प्रयास दबाव में आ सकता है, जिससे उसके वैश्विक कूटनीतिक प्रभाव पर असर पड़ सकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय धारणा:** रूस-यूक्रेन संघर्ष पर भारत का रुख वैश्विक जांच के दायरे में होगा, जिससे एक तटस्थ, संतुलनकारी शक्ति के रूप में इसकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी।
- **आर्थिक अलगाव का जोखिम:** यदि कई देश अमेरिका के साथ मिलकर समान उपाय लागू करते हैं, तो भारत को व्यापक आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

आगे की राह -

- **कूटनीतिक संपर्कों को तीव्र करना:** भारत की स्थिति को स्पष्ट करने, छूट की मांग करने तथा एक व्यावहारिक, बहु-संरक्षित विदेश नीति की आवश्यकता पर प्रकाश डालने के लिए अमेरिका और रूस दोनों के साथ सक्रिय रूप से संपर्क करना।
- **व्यापार एवं ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाना:** भारत के निर्यात बाजारों में विविधता लाने के प्रयासों में तेजी लाना तथा ऊर्जा और रक्षा उपकरणों जैसे महत्वपूर्ण आयातों के लिए किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता कम करना।
- **सामरिक नीति संतुलन:** रिश्तों में सावधानीपूर्वक संतुलन बनाए रखें, यह सुनिश्चित करते हुए कि न तो अमेरिका और न ही रूस अलग-थलग महसूस करें, साथ ही भारत के सामरिक और सुरक्षा हितों की रक्षा करना।

- **घरेलू विनिर्माण को मजबूत करना:** बाहरी दबावों या आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों से उत्पन्न कमजोरियों को कम करने के लिए रक्षा और ऊर्जा के लिए घरेलू क्षमता निर्माण में निवेश करना।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** एकतरफा प्रतिबंधों से बचने के लिए आम सहमति बनाने हेतु अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं और बहुपक्षीय मंचों के साथ काम करना, दंडात्मक आर्थिक उपायों पर बातचीत को बढ़ावा देना।

स्रोत: [इंडियन एक्सप्रेस](#)

